International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 5 Issue 4, July-August, 2017, Impact Factor: 1.554

दलितों के उत्थानक – डॉ. भीमराव अम्बेडकर

डॉ. विशाल कुमार शर्मा

हेड, इतिहास विभाग, हिंदू कॉलेज, सोनीपत

डॉ. भीमराव अम्बेडकर न केवल एक अच्छे समाज सुधारक एवं अद्वित्तीय दलितोद्धारक ही थे, अपितु एक अच्छे विद्वान एवं लेखक थे। उन्होनें 1916 से ही समाज की दयनीय दशा एवं जाति–व्यवस्था पर अपना लेखन प्रारम्भ किया।डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों को संगठित करने के अथक प्रयास किये। उनका प्रमुख लक्ष्य ही दलित समाज को संगठित कर संघर्ष के लिए तैयार करना तथा समाज में विद्यमान असमानता और अन्याय को मिटाना था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक महान् विचारक तथा लेखक थे। वे सामाजिक वर्ण भेद के विरोधी थे। इन्होनें दलित चेतना का जन्मदाता होने के साथ–साथ समाज में शोषित वर्ग के अधिकारों को दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। डॉ. भीमराव अम्बेडकर हिन्दु सामाजिक व्यवस्था को समतावादी समाज की स्थापना के रास्ते में रूकावट मानते थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक कुशल लेखक, पत्रकार, विद्वान विचारक, निर्भीक वक्ता एवं साहस के धनी थे। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य संस्कृति और परम्परा के नाम पर अमानवीयता को बढ़ावा देने वाले तत्त्वों को जड़ से समाप्त करना था। इस संदर्भ में उन्होनें कहा था,'मैं घृणा करता हूँ अत्याचार से, अन्याय से, बनावटी गौरव और वैभव से, बकवास से और व्यर्थ के विवाद से और मेरी घृणा की लपेट में वे सभी व्यक्ति आते हैं जो इन बातों से ग्रस्त हैं।' उन्होनें कहा कि वे समाज के श्रेष्ठ वर्ग द्वारा दलित वर्ग के प्रति किये जा रहे अत्याचारों को खत्म कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बाबा साहेब का मानना था कि दलित और सवर्ण समाज के दो हाथों के समान हैं, यदि मनुष्य का एक हाथ क्षतिग्रस्त होता है तो वह अपंग हो जाएगा, इसी प्रकार दलित वर्ग की लोकहिताय अनदेखी होने पर समाज की व्यवस्था भी पंगु हो जाएगी। अतः समाज में वर्ण भेद नहीं होना चाहिए। सच तो यह है कि सभी वर्णों के परस्पर सहयोग से ही देश व समाज का विकास संभव है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दु जाति–व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए कहा है कि प्राचीन हिन्दु वर्ण–व्यवस्था के कारण ही अछूतों का एक दल बना दिया गया था। धीरे–धीरे यह जन्म पर आधारित हो गया तथा समाज का एक वर्ग अछूत हो गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने जाति–व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा कि हिन्दु समाज में शूद्र कहे जाने वाले वर्ग के लोगों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया। यहाँ तक कि उनके शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भी छीन लिया गया। मंदिरों में उनके प्रवेश पर रोक लगा दी गई। इस तरह उनकी हालत अत्यन्त दयनीय और गुलाम से भी बदत्तर हो गयी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मानना

था कि शूद्र कहे जाने वाले दलित वर्ग के लोगों की स्थिति सुधारने हेतु जाति–व्यवस्था को समाप्त करना आवश्यक है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि मनु द्वारा स्थापित वर्ण–व्यवस्था में ब्राह्मण जाति को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया। अपनी इस विशिष्ट स्थिति के कारण ही ब्राह्मण वर्ग ने वर्ण–व्यवस्था पर एकाधिकार कर लिया तथा समाज के एक बड़े वर्ग को शूद्र का दर्जा दे दिया। हिन्दु सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मणों को ही सामाजिक नियमों और रीति–रिवाजों के निर्धारण का अधिकार था। अतः शूद्रों पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों में ब्राह्मणों की सहमति रहती थी। डॉ. भीमराव अम्बेडकर इस ब्राह्मणवादी व्यवस्था को दलितों पर होने वाले अन्याय के प्रति उत्तरदायी मानते थे। यही कारण है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ब्राह्मणवाद का विरोध किया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि भारतीय जाति–व्यवस्था में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है। यहाँ तक कि उनके अनुसार हिन्दु धर्म भी असमानता के विचार का पोषक था। यही कारण था कि अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होनें हिन्दु धर्म तथा हिन्दु जाति–व्यवस्था के साथ सम्बन्ध विच्छेद करके बौद्ध धर्म को अपनाया। उनके अनुसार समानता, आपसी भाईचारे तथा मानवतावाद का प्रतिक बौद्ध धर्म था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार जाति–व्यवस्था से छुआछुत तथा भेदभाव को बल मिला। इससे हिन्दु समाज की एकता भंग हुई तथा उसका पतन हुआ। विदेशी आक्रमणकारियों ने हिन्दु समाज की इस फूट का लाभ उठाकर भारत पर अधिकार कर लिया। भारत दीर्घकाल तक गुलाम रहा। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में शोषण को बढ़ावा देने में जाति–व्यवस्था का प्रमुख योगदान रहा है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मानना था कि भारतीय समाज की जातिवादी व्यवस्था के आधार पर संगठन शोषण को प्रोत्साहन देता है। इस व्यवस्था में शूद्रों के लिए निश्चित कर दिया गया कि वे सवर्णों की सेवा करते रहेगें। एक शूद्र के घर में पैदा हुआ बच्चा शूद्र ही होगा तथा शूद्र के रूप में ही मरेगा।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों को संगठित करने के अथक प्रयास किये। उनका प्रमुख लक्ष्य ही दलित समाज को संगठित कर संघर्ष के लिए तैयार करना तथा समाज में विद्यमान असमानता और अन्याय को मिटाना था। दलित वर्ग को ऊपर उठाने हेतु उन्होनें सर्वप्रथम 20 जुलाई, 1924 को 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया तथा आगे चलकर समाज समता संघ, इंडिपेन्डेंट लेबर पार्टी, म्यूनिसिपल वर्कर्स यूनियन, महार पंसायत, आल इंडिया शिड्यूल्ड कास्ट फैडरेशन, द बिल्डिंग ट्रस्ट, द शिड्यूल्ड कास्ट इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, पीपुल्स ऐज्यूकेशन सोसायटी, भारतीय बुद्ध जनसंघ, भारतीय बौद्ध महासभा, मुम्बई राज्य कनिष्ट गरकामगृत एसोशिएसन, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया आदि प्रमुख संगठनों के संस्थापक अध्यक्ष अथवा मुखिया होने के अतिरिक्त डॉ. भीमराव अम्बेडकर मुम्बई विधानसभा के 1927 से 1942 तक सदस्य, 1942 में वायसराय की कार्यकारिणी में श्रम मंत्री, संविधान सभा के सदस्य एवं उसकी प्रारूप समिति के अध्यक्ष, प्रथम विधिमंत्री तथा अपने महापरिनिर्वाण तक राज्यसभा के सदस्य रहे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जानते थे कि राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान है। एक अवसर पर दलित समाज को सम्बोधित करते हुए उन्होनें कहा था कि सारी सामाजिक प्रगति राजनीतिक सत्ता पर दनिर्भर करती है। राजनीतिक सत्ता सामाजिक प्रगति का द्वार है। यदि अनुसूचित जातियाँ अपने आप को एक तीसरी पार्टी के रूप में संगठित कर लें तथा कांग्रेस और समाजवादी दोनों विरोधी पार्टियों के बीच में एक तीसरी ताकत बन जाये ंतो वे इस राजनीतिक सत्ता को प्राप्त कर अपनी मुक्ति का द्वार खोल सकती हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दु धर्मग्रन्थों का गहनता से अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि दलित वर्गों के ऊपर थोपी गई निर्योग्याताओं एवं उनके ऊपर किए जाने वाले अत्याचारों के मूल में भारतीय धर्मग्रन्थों की मान्यताएँ हैं। अतः दलितों को इन निर्योग्यताओं से मुक्ति प्राप्त करना धर्मान्तरण के बिना संभव नहीं है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने जाति–व्यवस्था के विनाश की जोरदार वकालत की क्योंकि उनकी मान्यता थी कि वह सामाजिक बंधुत्व और एकजुटता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। उनका मानना था कि समाज का गठन तर्क शक्ति अथवा विवेक पर ही आधारित होनी चाहिए, न कि जाति–व्यवस्था की निर्मम एवं बर्बर परम्पराओं पर। महात्मा गाँधी को जाति विध्वंसकारी डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार पसंद नहीं थे, इसलिए उन्होनें एक अवसर पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर को हिन्दुत्त्व के लिए चुनौती कहकर पुकारा था। उनके द्वारा दी गई वह चुनौती शायद हिन्दुत्त्व के लिए चुनौती न होकर जाति–व्यवस्था के समर्थक नेताओं की दिमागी विचारधारा के लिए दी गई चुनौती मानी जानी चाहिए।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जाति, वर्ण और हिन्दु धर्म सम्बंधी विचार वर्तमान में प्रासंगिक हैं। आज भी हिन्दु समाज को जाति–व्यवस्था खोखला कर रही है तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरा बनी हुई है। हिन्दु धर्म में धर्मतारण की बढ़ती घटनाएँ भी डॉ. भीमराव अम्बेडकर की उन आंशकाओं को सही साबित करती हैं जो उन्होनें 80 वर्ष पूर्व व्यक्त की थी। उनकी मान्यता थी कि यदि हिन्दुवाद को बचाना है तो जाति–व्यवस्था को समाप्त करना होगा और यह तब तक संभव नहीं है जब तक हिन्दु धर्म, ग्रन्थ, स्मृतियों एवं शास्त्रों की पवित्रता की भावना मन में बैठी रहेगी। सामाजिक सुधारों को राजनीतिक सुधारों पर वरीयता देने के लिए चाहे उस समय डॉ. भीमराव अम्बेडकर की कितनी ही आलोचना क्यों की गई हो, लेकिन वर्तमान में राजनीति में होने वाला जातिवाद एवं जातियकरण उन्हें प्रासंगिक बनाता है।

सन् 1927 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलित आंदोलन को नई दिशा प्रदान करने और बहिष्कृत समाज की सामाजिक–आर्थिक एवं राजनीतिक आवाज उठाने के लिए 'बहिष्कुत–भारत' पत्रिका निकाली। इंग्लैण्ड से लैटकर अपने जीवन का उद्देश्य दलितों को समर्पित करके उन्होनें यह युग परिवर्तनकारी कार्य किया। इसी संदर्भ में 14 मार्च, 1927 को महाड़ में 'कोलाबा जिला बहिष्कृत परिषद स्थापित की। जिसके तत्वाधान में सामाजिक आंदोलन और अप्रैल 1927 से 'बहिष्कृत भारत' का प्रकाशन शुरू किया। इसके संपादन का दायित्व उन्होनें स्वयं संभाला। एक वर्ष की अल्पावधि में उन्होनें समूचे महाराष्ट्र और महाराष्ट्र को स्पर्श करने वाले प्रांतों में तथाकथित ब्राह्मण अभिमान को समाप्त कर दिया। अस्पृश्य जातियों के शोषण और उन पर

किए जाने वाले अत्याचारों, उनके मौलिक अधिकारों के हनन और सामाजिक बंधनों के विरूद्ध तुफान खड़ा कर दिया। अतः 'बहिष्कृत समाज' मराठी भाषी लाखों दलित–अछूतों की आवाज बन गया।

संदर्भ–सूची

1. यादव विरेन्द्र सिंह : बीसवीं सदी के महानायक बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर पृ.स. 229
2. सिंह श्रीप्रकाश : अल्पसंख्यक प्रश्न एवं संवैधानिक प्रावधान, पृ. स. 19,22,23,
3. जाटव डी. आर : सोसल फिलॉस्पफी ऑफडॉ.अम्बेडकर इन डग्ल्यू एन. कुबेर, पृ. स. 110–111,
4. उपाध्याय सौरभ : डॉ.अम्बेडकर और दलित चेतना, पृ. स. 125–126,
5. हर्ष हरदान : डॉ. अम्बेडकर जीवन और दर्शन, पृ. स. 66,
6. भारत एस. आर. : मुक्ति संग्राम, पृ. स. 59,
7. नैमिशराय मोहनदास : भारतीय दलित आंदोलन का इतिहास, पृ. स. 217–218